ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. No.- 97-100
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-18, No.- II, Issues-32, YEAR- April-June-2024

भारत–चीन LAC टकराव (विश्लेषणात्मक अध्ययन)

सुप्रिया पाठक

शोध अध्येत्री– राजनीति विज्ञान, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्याल, गोरखपुर (उ0प्र0), भारत

Received-26.04.2024, Revised-02.05.2024, Accepted-08.05.2024 E-mail: umakhantsupriya@gmail.com

***सारांशः** हाल के दिनों में एक बार पुनः लद्दाख में 17 हजार फिट की ऊँचें बर्फीले एवं दुर्लभ पर्वतीय क्षेत्र में अन्तर्राष्ट्रीय सीमा पर भारतीय क्षेत्र में चीनी घुसपैठ से भारत और चीन के मध्य राजनैतिक और सैनिक तनाव बन रहा है। सन् 1962 की कड़वी यादों को पीछे छोड़कर पिछले दो दशकों से दोनों देशों के बीच सभी स्तर पर सामान्य हो रहे आपसी रिश्तों पर यह घटना एक प्रश्न चिन्ह लगाती है। चीनी विश्वाघात उसकी विस्तारवादी मानसिकता भी द्योतक है।*

कुंजीभूत शब्द– सैन्य टकराव, विस्तारवादी नीति, समझौते, पी0एल0ए0, भारतीय सेना, चीनी सेना, राष्ट्रपति प्रधानमंत्री, अन्तर्राष्ट्रीय।

अगर यह कहा जाये कि सन् 1962 के भारत–चीन युद्ध के बाद से दोनों देशों के सम्बन्ध बेहद नीचे चले गए तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी और इसका पूरा दोष भारत व चीन के बीच वास्तविक नियन्त्रण रेखा पर हुई घटनाओं को जाता है। अगर वर्ष 2013 में लद्दाख में एल0ए0सी0 पर हुई घटना को देखना होगा। अप्रैल 2013 में पिपुल्स लिबरेशन आर्मी का गश्ती दल देपसांग क्षेत्र में बुर्टसे तक आ गया था। इस गश्ती दल को भारतीय सेना द्वारा रोका गया और दोनों सेनाओं के बीच तनाननी की स्थिति बन गई। तीन सप्ताह तक यह तनातनी बनी रही हो बाद में गश्ती दल वापस लौट गया और मामला शान्त हुआ। इसके बाद 2014 में ही चुमार में भी ऐसी ही स्थिति सामने आई और दो सप्ताह तक जद्दोजहद चली उसके बाद तर्क–वितर्क और कठोर वार्ता के बाद मामला सुलझ गया। 2017 में जब भारत–चीन सीमा पर डोकलाम विवाद उठा तो उस समय पैगोंगत्सो में पथराव भी घटना सामने आई। 2017 से 2020 तक स्थिति काफी हद तक ठीक रही। इसी दौरान चीनी राष्ट्रपति शीजिनपिंग और भारतीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के बीच दो अनौपचारिक बैठक (पहला बुहान में और दूसरा तमिलनाडु के मल्लापुरम में) हुई। इन बैठकों में एल0ए0सी0 पर शान्ति कायम रखने पर बात हुई।

पिपुल्स लिबरेशन आर्मी (PLA) हर साल पूर्वी लद्दाख के सामने प्रशिक्षण अभ्यास करती रही है। सन् 2020 में भी PLA के सैनिक अभ्यास कर रहे थे, लेकिन अचानक वे LAC की तरफ बढ़ना शुरु कर दिए। परिणामस्वरूप 05 मई, 2020 को गलवान और पैगोंगत्सों में सैनिकों का आमना–सामना हो गया। दोनों सेनाओं के मध्य संघर्ष हुआ और दोनों और के सैनिक घायल हुए। उधर 09 मई को चीनी गश्ती दल सिक्किम के नाकुला में प्रवेश करने से दोनों सेनाओं में झड़प हुई। चीनी सेना की मंशा को भापते हुए भारतीय सेना ने भी अपनी तैयारी शुद्ध कर दी। चीनी सैनिक पैंगोंत्सों के विवादित क्षेत्र में अपना सैन्य स्ट्रक्चर बना लिए थे। यह इलाका फिंगर 1 से लेकर 8 तक फैला हुआ है। भारतीय दावे के अनुसार LAC फिंगर 8 पर है किन्तु चीनी दावा फिंगर 4 तक है फिंगर 4 से फिंगर 8 तक इलाका हमेशा से विवाद की जड़ रहा है।

स्थिति बिगड़ती देख दोनों से कोर कमाण्डरों की वार्ताए शुरु हुई। लम्बी वर्ता के पश्चात् इस बात पर सहमति की पुष्टि करने विहार रेजिमेंट के सैनिक गए तो देखा कि चीनी सेना भारतीय इलाके में टेंट गाड़ लिए थे। इस इलाके को खाली कराने के द्वारा बड़ी संख्या में चीनी सैनिकों ने उस टुकड़ी को घेर लिया। दोनों सेनाओं में टकराव हुआ और 20 भारतीय सैनिक मारे गए। चीन के भी लगभग उतने ही सैनिक हताहत हुए। दोनों देशों के रिश्तों में यह एक बड़ा मोड़ था। इसी दौरान चीनी सेना ने गोग्रा और हॉट स्प्रिंग इलाको पर भी कब्जा कर किया।

चीनी सेना कैलाश रेंज पर कब्जा जमाने की योजना बना ही रही थी कि भारतीय सेना में वहाँ अपनी तैनाती कर दी। उसके बाद से उच्च सैन्य कमाण्डर स्तर पर बातचीत होती रही है। भारत का यही कहना है कि मई 2020 के पहले की स्थिति बहाल की जाए। दस वार्ताओ के बाद पी0एल0ए0 ने फरवरी में पैंगोंग के उत्तरी छोर और भारत ने कैलाश रेंज से वापसी कर ली, हालांकि, अब भी कुछ जगह तनातनी की स्थिति है।

सवाल यह उठता है कि पी0एल0ए0 ने यह हरकत क्यों की? उसके असली मकसद पर पहुँच पाना तो बहुत मुश्किल है, पर एक इण्टरव्यू में विदेश मन्त्री एस0 जयशंकर ने कहा कि इस हरकत के लिए चीनी पक्ष अलग–अलग कारण गिना चुका है, परन्तु एक बात तो साफ है कि पी0एल0ए0 का इरादा कुछ भी रहा हो किन्तु दोनों देशों का आपसी विश्वास चकनाचूर हो गया है। रिश्तों को पुनः पुरानी स्थिति में लाने में बहुत समय लगेगा। इतना ही नहीं, सामान्य स्थिति बहाल करने के लिए एल0ए0सी0 पर शान्ति कायम रहना बहुत जरुरी है।

शोध का उद्देश्य –

1. भारत चीन लैक टकराव के विभिन्न बिन्दुओं का वर्णन करना।
2. विवाद के कारणों का तथ्यात्मक विश्लेषण करना।
3. समस्या से साधारण जनमानस और बुद्धिजीवियों को अवगत कराना।
4. प्रस्तावित समधान

शोध पद्धति– शोध पत्र के प्रथम भाग में प्रस्तावना और उद्देश्य तथा दूसरे भाग में विवाद के विभिन्न बिन्दुओं पर प्रकाश डाला

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-18, No.- II, Issues-32, YEAR- April-June-2024

गया है। अन्तिम भाग में निष्कर्ष का वर्णन है। शोध पत्र को तैयार करने हेतु कई विद्वानों द्वारा लिखित शोध पत्र व पुस्तकों तथा इण्टरनेट की साइटों से जानकारी ली गई है।

1962 की पराजय की मानसिकता टूटी तथा चीन को आइना दिखाया– भारत के लिए सबसे अच्छी बात यह है कि हमने अपनी शर्तों पर चीनी सेना को वापस भेजा है। यह पहली बार हुआ है कि ने लिखित रूप से वापसी की शर्तों को माना है और उनका पालन किया है। पहले चरण में वापसी जिस आधार और स्टाइल में हुई है। वह पूरी तरह से कापी बुक स्टाईल में हुई है। दानों सेनाओं के मध्य विश्वास का अभाव था लेकिन पहला चरण बताता है कि इस विश्वास को बहाल करने की दिशा में जमीन पर काम हो रहा है।

डिस एंग्जमेंट की पूरी प्रक्रिया लिखित में होने के अलावा सेना मुख्यालयों से भी पुष्टि हुई है। चार स्टेप्स में यह चरण पूरा किया गया है। पहले स्टेप में बख्तरबंद वाहनों और तोपों व टैंकों को वापस भेजा था। दूसरे और तीसरे स्टेप्स में सेनाएं उत्तरी व दक्षिणी छोर से हटनी थी और चौथे स्टेप के तहत कैलाश रेंज से सेना की वापसी होनी थी। सर्विलायंस विमानों और यू0ए0वी0 और फिजिकल निरीक्षण से यह प्रक्रिया पूरी हुई है। दोनों ओर के कमाण्डरों ने फ्लैग मिटिंग्स और निरन्तर सम्पर्क में रहकर पूरी सैन्य प्रक्रिया अपनाते हुए सभी चरण पूरा किया।

एक बड़ा घटनाक्रम यह है कि चीन ने पहली बार आधिकारिक रूप से अपने चार सैनिक मारे जाने की बात मान ली है। भारतीय सेना का वैल्यू सिस्टम बहुत पारदर्शी है। भारतीय सेना झूठ नहीं बोलती, हमारे जितने सैनिक शहीद होते हैं हम उसे स्वीकार करते हैं और नमन करते हैं। चीन के सेना की स्थिति ऐसी हो इसकी उम्मीद नहीं है। दस महीने के तनातनी ने चीन की हकेड़ी खत्म कर दी। सन् 1962 के पराजित मानसिकता से भी हम बाहर आ गए है। हमारी सेना ने दिखा दिया कि हम इंच–इंच जमीन के लिए और उसकी रक्षा के लिए कटिबद्ध है। यथास्थिति बदलने की कोई भी नापाक हरकट बर्दाश्त नहीं की जायेगी।

LAC टकराव–भारत की राजनीतिक एकजूटता – भारत का मुकाबला एक ऐसे देश से था, जहाँ के राजनीतिक नेता अपनी जनता के सवालों के प्रति जवाबदेह नहीं है। यह स्थिति तात्कालिक शासको को लाभ देती है, क्योंकि उन्हें कोई भी कदम उठाने में हिचकिचाना नहीं पड़ता है, लेकिन उनके लिए नकारात्मक बात यह कि उन्हें जनता का मानसिक सम्बल नहीं मिलता है। जहाँ भारत की 13 लाख सेना को 130 करोड़ भारतीयों का समर्थन प्राप्त था। वही चीनी PLA को 145 करोड़ की जनता में से कितनों का समर्थन प्राप्त था ये तो वक्त ही बताएगा। भारत की विपक्षी राजनीतिक दल जो सत्तारुढ़ पार्टी के विचारधारा के साथ भी नहीं थे, उन सभी नेताओं के बयानों में देश की एकजुटता साफ दिखाई दे रही थी।

राजनीतिक दलों के नेताओं ने लद्दाख में सैन्य बलों द्वारा दिखाई गई बहादुरी की प्रशंसा की। उन्होंने इस घड़ी में प्रधानमंत्री के नेतृत्व पर भरोसा जाहिर किया और सरकार के साथ एकजुट रहने की प्रतिबद्धता प्रदर्शित की। उन्होंने हालात से निपटने पर अपनी राय और विचार व्यक्त किए।

सुश्री ममता बनर्जी ने कहा वह (उनका दल) सरकार के साथ मजबूती से खड़ी है। श्री चिराग पासवान ने कहा कि प्रधानमंत्री के नेतृत्व में देश सुरक्षित है और प्रधानमंत्री के साथ है। श्रीमती सोनिया गाँधी ने कहा कि ब्यौरे को लेकर नेता अभी तक अंधेरे में हैं और उन्होंने खुफिया रिपोर्ट तथा अन्य सम्बन्धित मामलों को लेकर भी सरकार से सवाल किए। सुश्री मायावती ने कहा कि यह राजनीति करने का समय नहीं है और कहा कि प्रधानमंत्री जो भी फैसला लेते हैं वह उनके साथ मजबूती से खड़ी नजर आएंगी। श्री एम0के0 स्टॉलिन भी प्रधानमंत्री के बयान का स्वागत किया और साथ देने की बात कही।

प्रधानमंत्री के शब्द, 'जिन लोगों ने हमारी भूमि पर कब्जा करने की कोशिश की उन्हें हमारे बहादुर 'धरती–पुत्रों' द्वारा मुँहतोड़ सबक सिखाया गया। 'मैं आपको आश्वस्त करता हूँ कि हमारी सशस्त्र सेनाएं हमारी सीमाओं की रक्षा करने में कोई कसर नहीं छोड़ेगी।'

भारतीय चीन के मध्य समझौता ब्यौरा– भारत और चीन दोनों की सरकारें दृढ़ विश्वास के साथ शान्ति एवं समृद्धि के लिए भारत–चीन सामरिक एवं सहयोगात्मक साझेदारी तथा दोनों देशों के मौलिक हितो को पूरा करने का प्रयास कर रही है। 07 सितम्बर, 1993 को भारत–चीन सीमा क्षेत्र में वास्तविक नियन्त्रण रेखा पर शान्ति एवं अमन चौन बनाए रखने पर भारत गणराज्य की सरकार तथा चीन जनवादी गणराज्य की सरकार के बीच समझौता हुआ। दोनों देशों ने इस बात की पुष्टी करते हुए कि कोई भी पक्ष किसी भी मध्यम से दूसरे पक्ष के विरुद्ध बल का प्रयोग नहीं करेगा या बल प्रयोग करने का प्रयास नहीं करेगा। 29 नवम्बर, 1996 को भारत चीन सीमा क्षेत्र में वास्तविक नियन्त्रण रेखा पर सैन्य क्षेत्र में विश्वासोंत्पादक उपायों पर समझौता किया गया। आगे 11 अप्रैल, 2005 को भारत चीन सीमा क्षेत्र में एल0ए0सी0 पर सैन्य क्षेत्र में विश्वासोत्पादक उपायों को लागू करने के तौर–तरीको पर भारत गणराज्य की सरकार और चीनी जनवादी सरकार के बीच प्रोटॉकाल पर हस्ताक्षर किया गया। इसके बाद 17 जनवरी, 2012 को भारत–चीन सीमा क्षेत्र पर परामर्श व समन्वय के लिए एक कार्यकारी तन्त्र की स्थापना पर दोनों देशों की सरकारों ने सहमति जताई।

इतिहास के टर्निंग बॉइट्स –

- 1910–11 चीन ने तिब्बत पर हमला किया।
- 13 फरवरी, 1913 – तिब्बज द्वारा आजादी की घोषणा।
- 3 जुलाई, 1914– ब्रिटिश भारत, तिब्बत और चीन के मध्य शिमला समझौता।
- 1932– चीन ने तिब्बत पर फिर से हमला और कब्जा किया, किन्तु तिब्बत तथा केन्द्रित की आजादी बरकार थी।
- 15 अगस्त 1947– भारत ब्रिटिश गुलामी से आजाद हुआ।
- 8 अगस्त 1949– एक समझौते के तहत भारत द्वारा भूटान को स्वतन्त्र राष्ट्र का दर्जा दिया गया।

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-18, No.- II, Issues-32, YEAR- April-June-2024

- 6 से 19 अक्टूबर 1956 – चीन ने तिब्बत के चामदो में हमले करके उस पर कब्जा कर लिया और तिब्बत को अपना गुलाम बना लिया।
- 5 दिसम्बर 1950– आजादी के समय अंग्रेजी से स्वतन्त्र होने की गारण्टी ले चुके सिक्किम ने भारत के संरक्षण में रहने का फैसला किया।
- 23 मई, 1951 चीन और तिब्बती नेता दलाईलाम के मध्य समझौता हुआ और तिब्बत के स्वतन्त्रता पर सहमति बनी किन्तु चार महीने बाद ही ल्हासा पर कब्जा कर लिया।
- 29 अप्रैल, 1954 भारत चीन के मध्य समझौता हुआ, जिसमें तिब्बत को चीन का क्षेत्र मान लिया गया।
- 1957 चीन ने भारतीय क्षेत्र अक्साई चीन में 10 हजार किमी0 का हाइवे बनाया और सरहदों तक इसे जोड़कर सड़कों का जाल बिछा दिया।
- 10 मार्च 1959– तिब्बत में चीन के खिलाफ हिंसा भड़की दलाई लामा ने भागकर भारत में शरण लिया।
- 25 अगस्त 1959– चीनी सैनिकों द्वारा NEFA में दो भारतीय सैनिकों की हत्या
- 21 अक्टूबर 1959– चीनी सेना ने लद्दाख में झड़प शुरु की और कोगं ला में 17 भारतीय सैनिक शहीद हुए।
- 1 अक्टूबर 1960– चीनी सेना का भारतीय सरहद पर जमावड़ा शुरु होगा।
- 25 नवम्बर 1961– प्रधानमंत्री नेहरु ने सीमा पर सैन्य मौजूदगी मजबूत करने की घोषणा की।
- अक्टूबर 1962– चीन से लगी मैकमोहन रेखा के पास चीनी सेना की बड़े पैमाने पर हलचल शुरु हुई।
- 19 अक्टूबर 1962– चीनी सेना ने भारतीय सैन्य ठिकानों पर बमबारी शुरु कर दी।
- 20 अक्टूबर 1962– चीन ने पूर्वोत्तर और लद्दाख दोनों मोर्चों पर हमला किया।
- 24 अक्टूबर 1962 – चीन ने अरुणांचल के त्वांगघाटी पर कब्जा कर लिया।
- 26 अक्टूबर 1962– भारतीय प्रधानमंत्री पं0 नेहरु ने अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अन्तर्राष्ट्रीय समुदायों से इस हमले के खिलाफ भारत के प्रति सहानुभूति और समर्थन की अपील की।
- 16 नवम्बर, 1962– चीन ने वालोंग पर कब्जा कर लिया।
- 19 नवम्बर 1962– चीन ने अरुणांचल के बोमडिला पर भी कब्जा कर लिया।
- 21 नवम्बर, 1962– चीन ने एक तरफा युद्ध विराम की घोषणा कर दी।
- 27 मई, 1992– चीन से पराजय का सदमा पं0 नेहरु झेल नहीं सके और उनका आकस्मिक देहान्त हो गया।
- अगस्त 1965– भारत–पाकिस्तान के बीच जंग हुई। पाकिस्तान पराजित हुआ और चीन का दामन थाम लिया।
- 20 सितम्बर 1966– चीनी सेना ने सिक्किम के पास लगी सीमा पर गोलियाँ चलाई।
- अगस्त 1967– भारत चीन के सैनिकों के बीच सिक्किम की सीमा पर कई बार टकराव हुए।
- 1970– चीन ने तिब्बत से काठमाण्डू तक सड़क बनाई। भारत ने नेपाल की आर्थिक नाकेबन्दी की।
- 1971 पूर्वी पाकिस्तान ने अलग होकर बांग्लादेश बनने की घोषणा की जिसमें भारत ने उसका सहयोग किया।
- 20 जनवरी, 1972– केन्द्र शासित अरुणांचल प्रदेश का गठन हुआ।
- 18 मई, 1974 – भारत ने परमाणु परीक्षण किया।
- 16 मई 1975 – सिक्किम भारत का 22वॉ राज्य बना।
- फरवरी 1979 – विदेश मन्त्री अटल बिहारी वाजपेयी ने चीन की यात्रा की 17 साल बाद किसी भारतीय विदेश मन्त्री ने यह पहली उच्च स्तरीय यात्रा की।
- 19–23 दिसम्बर 1988 – तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गाँधी ने चीन की यात्रा की।
- दिसम्बर 1991 – चीनी प्रधानमंत्री ली फंग ने भारत की यात्रा की।
- सितम्बर 1993– प्रधानमंत्री नरसिम्हा राव ने चीन की यात्रा की।
- 08 दिसम्बर 1998 – चीन और भूटान के बीच सीमा पर शान्ति बनाये रखने का समझौता हुआ।
- 8 फरवरी, 2007 – भारत और भूटान के मध्य–नया द्विपक्षीय समझौता।
- अप्रैल 2013 चीनी PLA ने LAC के पास एक प्लाटून भेजकर टेंट गाड़े। जवाब में भारतीय सेना ने 300 मीटर की दूरी पर इतने ही सैनिक सामने खड़े कर दिए। करीब तीन (3) सप्ताह के बातचीत के बाद 5 मई को दोनों सेनाएं पीछे हट गई।
- 18 जून 2016 भारतीय सेना ने भूटान के डोकलाम में चीनी सेना को विवादित क्षेत्र पर सड़क बनाने से रोका।
- 28 अगस्त 2016 – भारत और चीन की सेनाएं डोकलाम से पीछे हटने को राजी हुई।

निष्कर्ष– भारत और चीन दोनों ही जनसंख्या की दृष्टी से विश्व के दो बड़ें राष्ट्रों में से एक है और यह स्वाभाविक है कि दोनों के बीच मित्रता व सहयोग होना एशियाई क्षेत्र में शान्ति स्थापना एवं विकास के लिए अति आवश्यक है। सिक्किम से लगी अन्तर्राष्ट्रीय सीमा को छोड़कर भारत–चीन सीमा क्षेत्र में कई इलाकों को लेकर विवाद है। इतिहास साक्षी है कि भारतीय सेनाओं ने कभी अन्तर्राष्ट्रीय सीमा रेखा को लांघकर किसी अन्य देश की सीमा में अनाधिकृत ढंग से प्रवेश नहीं किया है, किन्तु चीनी सेना की बार–बार भारतीय सीमा क्षेत्र में घुसपैठ उसकी जानबूझकर की गई विकृत विस्तारवादी मानसिकता को ही दर्शाता है। ऐसा नहीं है कि चीन ऐसा केवल

भारत के साथ ही करता है, अपितु अन्य पड़ोसी देशों के साथ भी कमोवेश ऐसी ही स्थिति है। वास्तविकता यह है कि चीन अपनी सैन्य तथा आर्थिक ताकत के दम पर वर्चस्व स्थापित करना चाहता है और दुनिया को यह दिखाना चाहता है कि अब वह महानशक्ति बन चुका है। भारत की उदारता, उदासीनता और नरम रवैया चीन जैसे आक्रमक विचारधारा वाले देश के लिए उचित नहीं है। सीमान्त क्षेत्रों में आधारभूत ढ़ाँचागत विकास कार्य बहुत ही धीमी गति से हो रहा है। इसके विपरीत चीन अपने क्षेत्र में सड़क संचार एवं अन्य बुनियादी विकास का जाल सा बिछाता जा रहा है। यातायात व संचार साधनों के बिना आधुनिक युद्धों में न मनोबल बढ़ाया जा सकता है और न ही युद्ध में विजय की कल्पना की जा सकती है। 1962 में चीन से पराजय की एक बड़ी वजह यही थी। समुद्र की तरह शान्त दिखाई दे रहे सौहर्दपूर्ण तथा मित्रतापूर्ण रिश्तों के वातावरण में भी राष्ट्रों के मध्य कब तनाव, कड़वाहट और युद्ध की स्थिति पनप जाए इसका अंदाजा नहीं लगाया जा सकता है और फिर भारत चीन के रिश्ते में तो समुद्र सी शान्ति कभी दिखाई ही नहीं दी। तमाम अंदेशों और संसय के बावजूद दोनों ही देशों को परस्पर सारे मतभेद एवं कड़वाहट को भुलाकर आवाम की बेहतरी के लिए संवाद के माध्यम से सीमा समस्या सहित सभी विवादों का स्थाई समाधान निकालना चाहिए। यही दोनों देशों के लिए हितकर है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. www.dainiktribuneonline.com
2. शर्मा, हरवीर, भारत की सुरक्षा समस्या, संस्करब हर्यम्बुज प्रकाशन, मेरठ पृ0 128
3. दैनिक भास्कर
4. कौशिक मुकेश लैक टकराव इन साइड स्टोरी (प्रभात प्रकाशन प्रा0लि0) प्रभात प्रकाशन प्रा0लि0।
5. 18 India
6. BBC News
7. Indiatibet.net
8. Mukharji Parmeeta, K.Dev Arnav, Pang Meao China And Bharat, History, Culture, Co-operation and Competition "SAGA Publications India Pvt. Ltd.
9. Mishra Keshav, Bhartdwaj Praveen 2016 chloha Inh esa Hkkjr phu IEcU/k^^ GenNext Publications.
10. वाजपयी उषा 2013 'भारत चीन सम्बन्ध' नेहा पब्लिसर्स एण्ड डिस्ट्रीव्यूटर्स।
11. माधव राम, 'असहज पड़ोसी' युद्ध के 30 वर्षों बाद भारत और चीन प्रभात प्रकाशन।
12. कलहा, रणजीत सिंह 2022 'भारत चीन सीमा मुद्दे'' 'विवाद निपटान की तलाश प्रभात प्रकाशन प्रा0लि0।

*****